मानवता का प्रसंग, युवाओं के संग
(2 अक्टूबर, 2018)

जागृति
(31 दिसम्बर, 2018)

प्रकाशक
सतयुग दर्शन ट्रस्ट (रजि.)
"वसुन्धरा" ग्राम भूपानी–लालपुर रोड फरीदाबाद–121002 (हरियाणा)
ई–मेलः info@satyugdarshantrust.org
वैबसाइट: www.satyugdarshantrust.org
© सर्वाधिकार सुरक्षित सतयुग दर्शन ट्रस्ट (रजि.)
ISBN : 978-93-85423-20-8

प्रथम संस्करण
अप्रैल, 2019

मानवता का प्रसंग, युवाओं के संग

(2 अक्टूबर, 2018)

जागृति

(31 दिसम्बर, 2018)

मानवता का प्रसंग, युवाओं के संग

(2 अक्टूबर, 2018)

निमन्त्रण-पत्र

सभी सजनों को जय सीता राम जी,

युग आते हैं, युग जाते हैं, पर समयकाल कहाँ रुकता है
यह तो चलते चलते हुए भी, इक नए युग को रचता है

सजनों यह तो सर्वविदित ही है कि परिवर्तन का दौर चल रहा है। प्रत्येक क्षण व्यतीत होने के साथ-साथ जैसे-जैसे सतयुग का पदार्पण हो रहा है उसी त्वरित गति से कलुकाल का भी पर्दाफाश होता जा रहा है और वह सिमटता जा रहा है। इस संदर्भ में यह अलग बात है कि हम कितनी जागरूकता से परिवर्तन के इस दौर को समझ पा रहे हैं और तद्नुसार अन्दर भाव-स्वाभाविक तबदीली ला, आने वाले स्वर्णिम युग में प्रवेश पाने हेतु खुद को समयानुसार तैयार कर पा रहे हैं। पर जैसा कि कहते भी हैं कि समय किसी की प्रतीक्षा नहीं करता यानि वह तो निर्धारित क्रमानुसार चलता ही रहता है और जो उसकी इस चाल को समझ कर उसके संग हो लेता है वही सदा आनन्द में रहता है, इस बात को तहे दिल से समझने की आवश्यकता है। इसलिए तो सजनों वक्त-वक्त पर आपको सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ के अनुसार समभाव-समदृष्टि के स्कूल से, सत्संग में, विभिन्न कार्यक्रमों के आयोजनों व गतिविधियों के माध्यम से बार-बार संभलने का व मानव धर्म अपना कर अपना जीवन बनाने का आवाहन निरंतर दिया जा रहा है ताकि समय रहते ही आप सत्य को ग्रहण/धारण कर सको व अपना जीवन आबाद कर सतयुग में प्रवेश पा विश्राम को पा सको। अतः सजनों इस बात को याद रखते हुए 'इस वक्त दी शुद्ध कमाई दे मुताबिक ओ सजनों सतवस्तु में मौज उड़ानी जे, ओ मौज उड़ानी जे' अपना एक क्षण भी व्यर्थ न गँवाओ और अविलम्ब स्वभावों में परिवर्तन ले आओ। सजनों जानते हो यदि ऐसा न किया तो क्या होगा? जानो फिर वही होगा जो सच्चेपातशाह जी कहते हैं.....क्या? जाए सिखैंदे आए।

इसी परिप्रेक्ष्य में सजनों हमें यह बताते हुए अत्यन्त हर्ष हो रहा है कि कुदरत के आदेशानुसार अब कुछ ऐसा ही होने जा रहा है। तभी तो दिनाँक 2 अक्तूबर 2018 मंगलवार को 'मानवता का प्रसंग - युवाओं के संग' नामक कार्यक्रम/प्रतियोगिता का आयोजन सतयुग दर्शन वसुन्धरा के विशाल सभागार में किया जा रहा है। इस

विषय में सजनों जानो कि 12 वर्ष से लेकर 22 वर्ष तक के बच्चे, लगभग 3 से 4 मिनट तक 'मानवता' व 'शब्द है गुरु शरीर नहीं है' इस विषय पर अपने विचार हिन्दी या अंग्रेजी में ज़बानी (बिना कहीं से देखे) व्यक्त कर सकते हैं। अपने विषय को अधिक से अधिक प्रभावशाली बनाने के लिए विषय सम्बन्धित सारगर्भित भाषा व बीच-बीच में ग्रंथ या मानवता पर आधारित सूक्तियों व कविताओं की पंक्तियों का प्रयोग किया जा सकता है। प्रतियोगिता में भाग लेने वाले उत्तम प्रतिभागियों का आंकलन विषय से सम्बन्धित वक्तव्य, रुचिकर प्रस्तुति और कम से कम समय में अधिक से अधिक शब्द, शुद्ध एवं स्पष्ट बोलने के आधार पर किया जाएगा। प्रतियोगिता में भाग लेने से पूर्व दिनाँक 25 सितम्बर 2018 तक अपना रजिस्ट्रेशन श्री दीपेंद्र कांत, प्रधानाचार्य संगीत कला केन्द्र के पास करवाना अनिवार्य है। इस प्रतियोगिता में नामी/बेनामी का कोई सवाल नहीं यानि निर्धारित आयु सीमा से सम्बन्धित कोई भी जो अच्छे से उपरोक्त विषयों में अपने मुक्त विचार प्रस्तुत कर सकता है वह भाग ले सकता है। प्रतिभागियों ने स्क्रीनिंग के लिए प्रतियोगिता से एक दिन पूर्व यानि दिनाँक 1 अक्तूबर 2018 को सायः 5 बजे तक संगीत कला केन्द्र, वसुन्धरा अवश्य पहुँच जाना है। दिनाँक 2 अक्तूबर 2018 को सभी प्रतिभागियों ने सफेद कुर्ता पाजामा/पाजामी एवं गुलानारी दुपट्टा पहनना है। किसी भी प्रकार की जानकारी या सुझाव हेतु फोन न० 08700484455 पर बात कर सकते हैं।

इसके अतिरिक्त एक जरूरी सूचना सजनों यह है कि मानवता ओलम्पियाड के दौरान जिन भी शहरों के बच्चों या बड़ों ने मानवता विकास क्लब के अन्तर्गत बढ़-चढ़ कर अपना सहयोग दिया है, वे भी आगे मार्गदर्शन प्राप्त करने हेतु दिनाँक एक अक्टूबर शाम छः बजे तक वसुन्धरा (रात्रि में आयोजित होने वाली मीटिंग में) अवश्य पहुँच जायें ताकि सबको मानव धर्म का पाठ पढ़ाने हेतु सतवस्तु की जो एक लहर आरम्भ हुई है वह अब निरंतर निर्बाध सतत् रूप से आगे बढ़ती जाए। सबकी जानकारी हेतु मानवता विकास क्लब के सदस्यों की यह मीटिंग रात्रि 8 बजे होगी।

अपनी व अपने बच्चों की भलाई के लिए अपने व निकट सम्बन्धियों के बच्चों को इस आयोजन में सम्मिलित करना आवश्यक मानो व अभी से उनके अन्दर इसके प्रति रुचि पैदा करना आरम्भ कर दो।

सभी सजनों को जय सीता राम जी ।